

Date: 21/11/2020  
Page: 23  
Classmate

classmate  
Date: \_\_\_\_\_  
Page: \_\_\_\_\_

# जैन दर्शन में बन्धन और मोक्ष का विचार

अन्य भारतीय दर्शनों की तरह जैन दर्शन भी मोक्ष को जीवन का चरम लक्ष्य मानता है। मोक्ष बन्धन का प्रातिक्रम है। जैन मत में जीवों को दुःखों का सामना करना तथा जन्म-मृत्युचक्र तक भटकना बन्धन है। अन्य भारतीय दर्शनों में तिरस्ते आत्मा कहा जाता है उसे जैन दर्शन ने 'जीव' की संज्ञा दी है। 'जीव' और 'आत्मा' एक ही द्रव्य के ही नाम हैं। शरीर का निर्माण पदार्थ-कणों से हुआ है। वासनाओं के कारण अज्ञानवश जीव का पुद्गल से संयोग ही बन्धन है। वासनाएँ मूलतः चार हैं - क्रोध, मान, लोभ, माया। वासनाओं यानि कुप्रवृत्तियों के कारण जीव अपने कर्मों के अनुसार पुद्गल-कणों को आकृष्ट करता है। आकृष्ट पुद्गल-कण यानि कर्म-पुद्गल जब आत्मा की ओर प्रवाहित होते हैं तो उसे 'आशय' कहा जाता है। आशय जीव का स्वरूप गूँथ कर देता है और बन्धन की ओर ले जाता है। जब वे पुद्गल-कण जीव में प्रविष्ट कर जाते हैं तब उस अवस्था को बन्धन कहा जाता है। जैन मत में बन्धन के दो प्रकार हैं - भाव-बन्धन और द्रव्य-बन्धन। मन में दूषित विचारों का आना भाव-बन्धन है। जब पुद्गल-कण आत्मा में प्रविष्ट कर जाते हैं तो उसे द्रव्य-बन्धन कहते हैं। भाव-बन्धन, द्रव्य-बन्धन का कारण है।

इस प्रकार जीव और पुद्गल का संयोग बन्धन है। बन्धन भ्रष्टा प्रातिक्रम मोक्ष है। यानि जीव का पुद्गल से संयोग ही मोक्ष है। मोक्षावस्था में जीव का पुद्गल से पृथक् पृथक् करना ही मोक्षा के लिए संचित पुद्गल-कणों का उन्मूलन भी परमावश्यक है। नये पुद्गल-कणों का रोकने को 'संवर' तथा पुराने का हटाने को 'निर्जरा' कहा जाता है। इस कर्म-पुद्गल से मुक्त होने पर जीव वस्तुतः मुक्त हो जाता है।

जैन बचन का मूल कारण चारों कुप्रवृत्तियों यानी वासनाओं को ही माना जाता है। जिनका कारण अज्ञान है। अज्ञान का नाश ज्ञान से सम्भव है। इसलिए जैन दर्शन में मोक्ष के लिए सम्यक ज्ञान को आवश्यक माना गया है। सम्यक ज्ञान की प्राप्ति के लिए पथ प्रदर्शक यानी तीर्थंकर के प्रति श्रद्धा और विश्वास से ही सम्भव है। इसी को सम्यक दर्शन कहा जाता है। यह मोक्ष का दूसरा आवश्यक साधन है। सम्यक दर्शन और सम्यक ज्ञान के साथ मानव को अपनी पालना, इच्छा और मन को संयत करना परमावश्यक है। इसी को सम्यक चरित्र कहते हैं। जैन दर्शन में मोक्षानुभूति के लिए जीनों का सामूहिक सहयोग आवश्यक है जिसे 'त्रिरान' के नाम से सम्बोधित किया गया है। यही मोक्ष के मार्ग है। उमास्वामी के तत्त्वार्थसिद्धि में दूध प्रमाणरूप काणित है - सम्यक-दर्शन-ज्ञान-चरित्राणि मोक्ष मार्गाः।

बुद्धनात्मकता में मोक्ष-मार्ग में सबसे महत्वपूर्ण चीज सम्यक चरित्र ही कहा जा सकता है। सम्यक चरित्र के पालन के लिए निम्नलिखित आचरण आवश्यक हैं - 1) व्याक्ति को विभिन्न प्रकार की समिति यानी सहायता का पालन करना चाहिए।

2) मन वचन तथा शारीरिक कर्मों का संयम आवश्यक है। 3) दस प्रकार के व्यसनों का पालन जैन के मत में आवश्यक है जो हैं - लस, दुमा, लीच, तप, श्याम, लोभा, विराते, मर्दव, सरलता और प्रसन्नता।

4) जीत और अजीत के स्वरूप पर विचार आवश्यक है। 5) सही गर्मी, मूत्र, पेशाब आदि से प्राप्त दुःख को सहन करने की शौचता आवश्यक है। इस तप को 'परीषद' कहा जाता है।

6) पंचमहाव्रत का पालन आवश्यक माना गया है। जैन के पंच महाव्रत को वहि-वर्ग 'पंचशील' कहा गया है। जैन के पंच महाव्रत हैं -

जोना का बन्धन मोक्ष  
अहीसा, ज्ञान, अस्तेय, उभयचर्य और  
अपरिग्रह।

जोने के मत में अहीसा का अर्थ है - सभी पशु  
के जीवों की हींसा का परित्याग। - यही  
सभी जीव समान हैं; अतः किसी जीव की  
हिंसा करना अधर्म है।

ज्ञान का अर्थ है अज्ञान का परित्याग।  
ज्ञान पुत्र का पालन मन, वचन तथा कर्म  
से करना - चाहेना।

अस्तेय का अर्थ है - चोरी का निषेध। - चोरी  
का निषेध करना नैतिक अनुशासन का अर्थ है।  
उभयचर्य का अर्थ वासनाओं का त्याग करना।  
जिनों ने मन, वचन और कर्म से उभयचर्य का  
पालन करने का निर्देश दिया है।

अपरिग्रह - अपरिग्रह का अर्थ विषयासक्ति  
का त्याग है। मनुष्य के बन्धन के  
कारण का यानि अपरिग्रह - रूप, स्पर्श, वाग्दा-  
स्पर्श, शब्द इत्यादि का इन्द्रियों के विषयों  
का परित्याग करने अर्थात् जैन मत में  
दिया गया है।

अपने को उपरोक्त कर्मों  
से सिंचित कर मानव मोक्षानुभूति  
के योग्य हो जाता है। जीवों में कर्मों  
का आभाव उत्पन्न हो जाता है तथा  
पुराने कर्मों का दाय हो जाता है।  
इस उपरोक्त कर्मों द्वारा जीव अपनी  
वैवाकिक अवस्था को प्राप्त करता है।

यही मोक्षवस्था है, मोक्ष है।  
मोक्ष की अवस्था में आत्मा या जीव  
अपनी पूर्णताओं को पुनः प्राप्त  
कर लेती है।